

## अरावली पुनर्जनन योजना

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में दिल्ली वन विभाग ने अरावली के दुर्लभ देशी पेड़ों के संरक्षण के लिये [असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य](#) में एक **ऊतक संस्कृति प्रयोगशाला** की स्थापना की पहल की है।

### मुख्य बंदि:

- **ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला:** प्रयोगशाला एक इन-वटिरो पूर्ण वकिसति पौधे-से-पौधे के ऊतकों को नकालने में सकषम होगी, जससे एक ही वृक्ष से कई वृक्ष तैयार कयि जा सकेंगे।
- वन विभाग [भारतीय वानकी अनुसंधान और शकषिा परषिद \(ICFRE\)](#) एवं **वन अनुसंधान संस्थान (FRI)** के वनस्पतविज्जानयिों व वैज्जानकिों से सहायता लेगा।
- प्रयोगशाला का प्राथमकि लक्ष्य नयितरति वातावरण में लुप्तप्राय देशी वृक्षों को उगाना और **आक्रामक प्रजातयिों** के कारण पुनर्जनन चुनौतयिों का सामना करने वाली प्रजातयिों के पौधों को पुनर्जीवति करना है।
- टशू कल्चर कृषि में अत्यधकि प्रभावी साबति हुआ है, वशिष रूप से **केले, सेब, अनार और जेट्रोफा जैसी फसलों** के साथ, जो पारंपरकि खेती के तरीकों की तुलना में अधकि उपज प्रदान करता है।
- **अरावली योजना:**
- कुल्लू (घोस्ट टरी), पलाश, दूधी और धौ जैसी रजि प्रजातयिों का पुनर्जनन आक्रामक प्रजातयिों द्वारा बाधति होता है, जसके परणामस्वरूप जीवति रहने की दर कम होती है, बड़े पैमाने पर गुणन केवल ऊतक संस्कृति, वशिष रूप से **शूट संस्कृति के माध्यम** से प्राप्त कयि जा सकता है।
- प्रयोगशाला लुप्तप्राय **औषधीय पौधों** के संवर्धन में भी उपयोगी होगी।

### असोला वन्यजीव अभयारण्य

- असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य एक महत्त्वपूर्ण वन्यजीव गलियारे के अंत में स्थति है जो अलवर में **सरसिका राष्ट्रीय उद्यान** से शुरू होता है और हरयिाणा के मेवात, फरीदाबाद तथा गुरुग्राम ज़िलों से होकर गुज़रता है।
- इस कषेत्र में उल्लेखनीय दैनकि तापमान भन्निता के साथ **अर्धशुष्क जलवायु** है।
- वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पत मुख् रूप से एक **खुली छतदार काँटेदार झाडयिों** हैं। यह देशी पौधे जेरोफाइडकि अनुकूलन जैसे काँटेदार उपांग और मोम-लेपति, रसीले तथा टोमेंटोज पत्ते प्रदर्शति करते हैं।
- प्रमुख वन्यजीव प्रजातयिों में मोर, कॉमन वुडशराइक, सरिकीर मल्कोहा, नीलगाय, गोल्डन जैकल्स, स्पाँटेड हरिण आदि शामिल हैं।